श्री दीपावली पूजा विधान

निर्वाणोत्सव

यह पर्व वर्ष में एक समय मनाया जाता हैं।

१. कार्तिक कृष्णा अमावस्या (दिपावली पर्व)

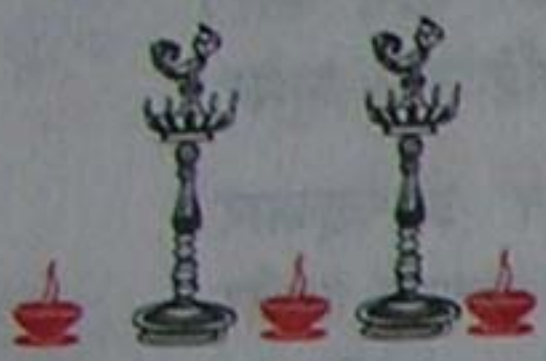

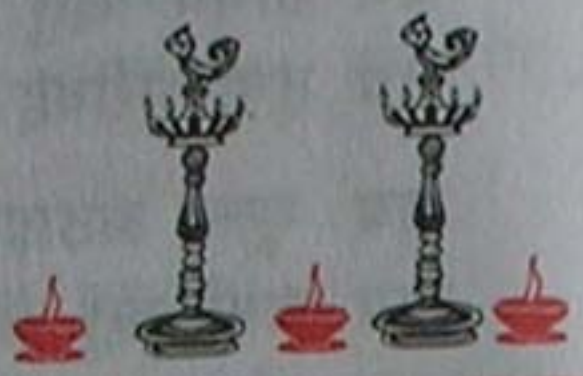

भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के अवसान में और अमावस्या के प्रात:काल स्वाति नक्षत्र में हुआ। निर्वाण कल्याणक पर देवों ने आकर ज्वाजल्यमान दीपकों की पंक्ति से पावापुर को प्रकाशमान किया। उसी दिन सायंकाल में भगवान महावीर के प्रथम गणधर ''गौतम'' को केवलज्ञान प्रगट हुआ और देवों ने गौतम स्वामी के केवलज्ञान महोत्सव को मनाया, गौतम स्वामी की पूजा की। इसलिये केवल ज्ञानरूपी प्रकाश के प्रतीक के रूप में दीपमालिका का उत्सव मनाया जाता है। गोधुलि बेला में मोक्षलक्ष्मी के अधिपति भगवान महावीर, केवलज्ञान के धनपति गौतम गणधर और केवलज्ञान बाणी रूपी सरस्वती की पूजा करते हैं। निर्वाण के रूप में गोल लड्डू जिसका कहीं आदि और अन्त नहीं है, चढ़ाते हैं तथा ज्ञान के प्रतीक के रूप में दीप प्रज्वलित करते हैं। पुण्य (अच्छा भाग्य) और विवेक (ज्ञान) के सामंजस्य से मानव जीवन में सुख सुयश और समृद्धि की प्राप्ति होती है। मन में शान्ति का वास होता है।

श्री दीपावली पूजा

पूजा की तैयारी

जिस स्थान पर पूजन करनी हो वहां पर छने हुए जल से स्वच्छतापूर्वक सफाई कर लें। पूजा सूर्यास्त के पहले ही करें। बही में स्वास्तिक आदि लिखने का कार्य शुभ मुहूर्त के अन्दर करें। पूजन पूरी होने पर बहीखाते में स्वास्तिक लिखें । अन्त में शान्ति पाठ करके पूजा समाप्त करें।

पूजा की सामग्री

पूजन के अष्टद्रव्य की व्यवस्था, नया बहीखाता, कम्प्यूटर, नयी कलम (1.) यन्त्र (2.) जिनवाणी (3.) चौकी... तीन चार (4.) श्रीफल एक (5.) कलश एक (6.) सूती लाल कपड़ा 1.25 मीटर (7.) दीपक पांच (8.) रोली, मोली, सिन्दूर, केसर दो ग्राम (9.) हल्दी पांच सुपारी पांच, धनियां बीस ग्राम, सरसों पचास ग्राम (10.) अगरबत्ती (11.) घी (12.) फूलमालाएं (13.) फल (14.) मिठाई, पताशा (15.) सवा रूपया

पूजा प्रारम्भ करें

नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।

जिनवाणी लेकर पूजा प्रारम्भ करें। णमोकार मंत्र एवं स्वस्ति वाचन करें । नव देवता की, भगवान महावीर स्वामी एवं सरस्वती की पूजा करें। गौतम गणधर की पूजा एवं अन्य पूजा या अर्घ्य अपनी श्रद्धा के अनुसार चढ़ाएं । निर्वाण काण्ड का पाठ भी करें । नई बही के अन्दर सीधे पृष्ठ पर ऊपर केसर/रोली/हल्दी से स्वास्तिक बनाएं और श्री का पर्वताकार लिखें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

इसके पश्चात पूजा प्रारम्भ करें

पावापुर जी

शुभ 卐 श्री महावीराय नमः 卐 लाभ

ॐ
श्री

शुभ श्री श्री लाभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री ऋषभदेवाय नमः श्री महावीराय नमः श्री गौतमगणधराय नमः श्री केवलज्ञानलक्ष्म्यै नमः

श्री जिन सरस्वत्यै नमः

श्री शुभ मिति वी. नि. संवत्.....दिनांक.....मास.....पक्ष.....तिथि.....वार को.....

दुकान/ फैक्टरी की.....बही का मुहूर्त किया

श्री वर्द्धमान । जैनं जयंतु शासनम् ।

निम्न मंत्र एवं यंत्र को बही पर केसर से लिखें और मंत्र की एक माला फेरें।

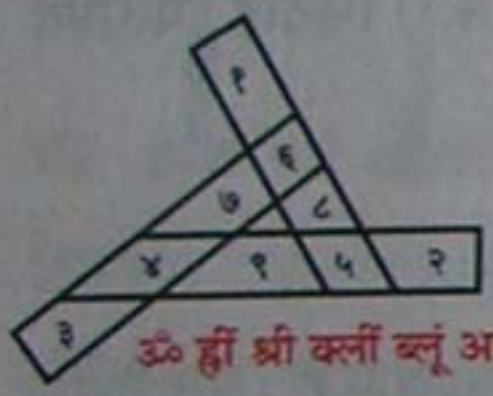

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ब्लूं अर्ह नमः

गल्ला (रूपये रखने की पेटी)
पर स्वास्तिक निम्न प्रकार बनायें।

श्री
शुभ 卐 लाभ
श्री वर्द्धमानाय नमः

बही लेखन के बाद 9 बार णमोकार मंत्र जपकर बही को लच्छे (कलावे सहित) में बांधकर दुकान के प्रमुख को बही हाथ में देवें और पुष्पक्षेपण करें। इसके बाद निम्न पद्य व मंत्र बोलकर शुभ कामना दें।

पद्य

आरोग्य वुद्धि धन धान्य समृद्धि पावे। भय रोग शोक परिताप सुदूर जावे॥
सद्धर्म शास्त्र गुरू भक्ति सुशांति होवे व्यापार लाभ कुल वृद्धि सुकीर्ति होवे॥
श्री वर्द्धमान भगवान सुवुद्धि देवे। सन्मान सत्यगुण संयम शील देवे॥
नव वर्ष हो वह सदा सुख शांतिदाई। कल्याण हो शुभ तथा अतिलाभ होवें॥

मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रो ह्रः अर्हत् सिद्धाचार्योपाधय-साधवः शांति पुष्टि च कुरूत कुरूत स्वाहा।

पश्चात् शांतिपाठ, क्षमापन करें और महावीराष्टक पढ़ें। अन्त में सबसे मिलकर नववर्ष की मंगल कामना करें।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानाय नमः

१०	१८	२	७
६	३	१४	१६
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

दुकान में पूर्व या
उत्तर मुहं दीवार
पर यह मंत्र
और यंत्र लिखे

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः सर्वकार्य कुरू कुरू स्वाहा

पेटी के अन्दर रूपया
रखने की थैली में यह मंत्र
और यंत्र भोजपत्र या
कपड़े/ कागज पर लिखकर रखें

२४	३२	२	७
६	३	२८	२७
३१	२५	८	१
४	५	२६	३०

व्यापार वृद्धि यंत्र

अर्हंतो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिन शासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।१।।
श्रीसिद्धांत-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नः मंगलम्।।२।।

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलोपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलोपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवली-पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

(ॐ अनादि-मूल-मंत्रेभ्यों नमः)
(यह पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्री देव शास्त्र गुरू पूजा का अर्घ

जल परम उज्जवल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनम के पातक हरूं।।
इह-भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं।।
वसुविधि अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यों अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बीस महाराज का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य संभार, रत्न जवाहर भर भर थाल।
नमूं कर जोड़, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर।।
पाँचों मेरु विदेह सुथान, तीर्थंकर जिन बीस महान।
नमूं कर जोड़ नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री सीमंधरादि-विद्यमान-विंशति-तीर्थं-करेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीनलोक वर्ती चैत्यालयों का अर्घ

यावंति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततै भक्त्या, त्रिः परीत्य नमाम्यहं।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक-सम्बन्धि जिनेन्द्र-बिम्बेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ

जल फल वसु वृन्दा अरघ अमंदा, जजत अनन्दा के कन्दा।
मेटो भवफन्दा सब दुःख दन्दा, हीराचन्दा तुम वन्दा।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी अन्तरजामी अभिरामी।
शिवपुर विश्रामी निज-निधिपामी सिद्ध-जजामी सिरनामी।।

ॐ ह्रीं अनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस महाराज का अर्घ

जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद जजत हरत भव फन्द पावत मोक्ष-मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इसके बाद श्री महावीर जिन पूजा (157) करें,
तत्पश्चात आगे दी हुई सरस्वती पूजन (205) आदि करें।